

## सलिक रोड के मार्ग में बदलाव

### प्रलमिस के लयि:

जलवायु परविरतन, सलिक रोड, [बेल्ट एंड रोड इनशिएटिवि \(BRI\)](#), [चीन-पाकसितान आर्थकि गलयारा \(CPEC\)](#)

### मेन्स के लयि:

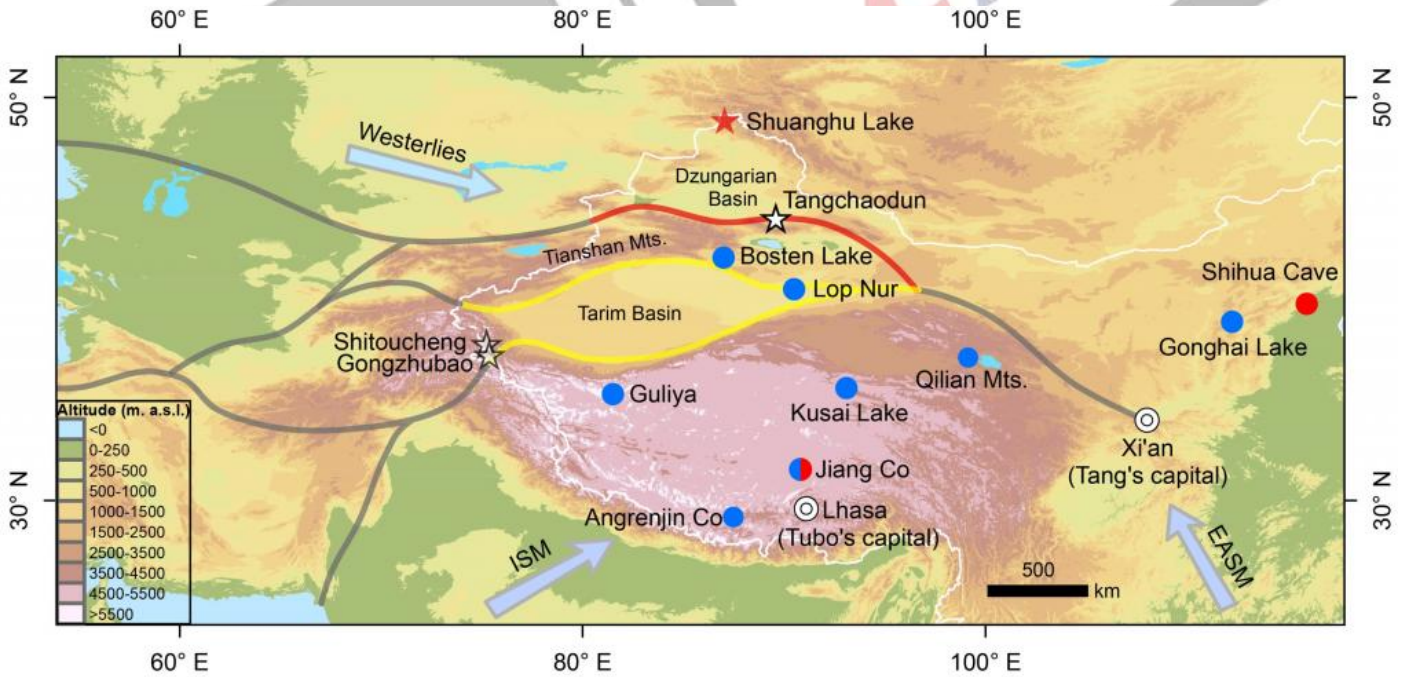
जलवायु परविरतन का प्रभाव, चीन-पाकसितान आर्थकि गलयारा तथा भारत के संबंघ में इसके नहितार्थ ।

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

## चर्चा में क्यो?

साइंस बुलेटिन पत्रकिा में प्रकाशति चीनी वैज्जानकिों के एक हालयिा अध्ययन के अनुसार, प्राचीन **सलिक रोड** का मुख्य मार्ग **जलवायु परविरतन** के कारण उत्तर की ओर स्थानांतरति हुआ है ।

- यह अध्ययन जलवायु परविरतन एवं मानव समाजों के स्थानकि विकास के बीच संबंघों के परीक्षण के करम में महत्त्वपूर्ण है ।



//

## सलिक रोड:

- **परिचय:**
  - सलिक रोड यूरोप के अटलांटिक समुद्र तट को एशिया के प्रशांत तट से जोड़ने वाले व्यापारिक मार्गों का एक विशाल नेटवर्क था।
  - इसका नाम इस मार्ग के सुदूर पूर्वी छोर पर स्थिति चीन से होने वाले आकर्षक रेशम के व्यापार के कारण रखा गया था।
  - रेशम के अलावा, इस मार्ग का उपयोग मसालों, सोने तथा कीमती पत्थरों जैसी अन्य वस्तुओं के व्यापार हेतु किया जाता था।
- **मार्ग:**
  - यह मार्ग समरकंद, बेबीलोन और कुस्तुंतुनिया सहित कई महत्त्वपूर्ण शहरों एवं राज्यों से होकर गुजरता था।
- **इतिहास:**
  - सलिक रोड का इतिहास 1,500 वर्षों से भी अधिक का है, जिससे पारंपरिक तौर पर दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व (जब यूरोप एवं चीन के बीच संपर्क और भी मजबूत हुए थे) का माना जाता है।
  - दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में चीन के हान राजवंश के सम्राट वू (Wu) ने अपने राजदूत झांग कियान को "पश्चिमी क्षेत्रों" (झिजियांग और उससे आगे के क्षेत्रों) में भेजा। इससे सलिक रोड के तारमि बेसनि मार्ग का क्रमिक विकास हुआ।
    - इस अग्रणी पर्याय के लिये झांग कियान को "सलिक रोड का जनक" होने का श्रेय दिया जाता है।
  - चीन की तत्कालीन राजधानी (शियान) की ओर आने वाले या वहाँ से जाने वाले व्यापारियों द्वारा तारमि बेसनि मार्ग का उपयोग किया जाता था और यह तियानशान, कुनलुन तथा पामीर जैसे पहाड़ों से घरे बेसनि के किनारे से होकर गुजरता था एवं तकला मकान का रेगिस्तान भी इस बेसनि से संलग्न था।
  - तारमि बेसनि से होकर यात्रा करने के बाद व्यापारी पश्चिम की ओर लेवंत (आधुनिक सीरिया, जॉर्डन एवं लेबनान) और अनातेलिया की ओर बढ़ते थे, जहाँ वस्तुओं को भूमध्यसागरीय बंदरगाहों के जहाजों तक पहुँचाया जाता था तथा यहाँ से इनका स्थानांतरण पश्चिमी यूरोप की ओर होता था।
  - इस मार्ग ने यूरेशिया के विपरीत छोरों के बीच वस्तुओं, लोगों, विचारों, धर्मों और यहाँ तक कि बीमारियों के प्रसार के साथ यूरोप तथा एशिया की सभ्यताओं के बीच सांस्कृतिक एवं आर्थिक आदान-प्रदान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## सलिक रोड का मार्ग कैसे बदला गया?

- **पुराना मार्ग (तारमि बेसनि मार्ग):**
  - सलिक रोड का मूल मुख्य मार्ग तारमि बेसनि के चारों ओर से होकर गुजरता था, जो उत्तर में तियानशान पर्वतमाला (Tianshan Mountains) और दक्षिण में कुनलुन पर्वतमाला (Kunlun Mountains) के बीच स्थिति है।
  - व्यापारियों ने तारमि बेसनि की कठोर रेगिस्तानी परिस्थितियों से बचने के लिये यह मार्ग चुना।
- **नया मार्ग (जुंगगर बेसनि मार्ग):**
  - लगभग 420-850 ई. की अवधि के दौरान कारवाँ ने सलिक रोड पर तारमि बेसनि के आसपास के पारंपरिक मार्ग का अनुसरण नहीं किया।
    - इसके बजाय उन्होंने तियानशान पर्वतमाला (आधुनिक शनिजियांग के जुंगगर बेसनि में) की उत्तरी ढलानों का उपयोग करना शुरू कर दिया, जिससे ऐतिहासिक रूप से जुंगगरिया कहा जाता था।
    - इस "नए उत्तरी" मार्ग ने अंततः तारमि बेसनि मार्ग को पूरी तरह से प्रतिस्थापित कर दिया।
  - **नये मार्ग के परिणाम:**
    - इसने तुर्को-सोग्दियन सांस्कृतिक क्षेत्र के विकास को बढ़ावा दिया।
    - इसने चीनी राजवंशों और मध्य तथा पश्चिम एशिया के खानाबदोश साम्राज्यों, जैसे खज़र साम्राज्य (Khazar Empire), के बीच संचार तथा व्यापार को सुगम बनाया।
    - इस बदलाव से यूरेशिया में संचार और व्यापार में सुधार हुआ तथा प्रशांत तथा अटलांटिक क्षेत्रों के बीच कनेक्टिविटी स्थापित हुई।

## सलिक रोड के स्थानांतरण के पीछे क्या कारण थे?

- **जलवायु परिवर्तन:**
  - शोधकर्ताओं ने पूर्व जलवायु (Past Climate) का पुनर्निर्माण करने के लिये चरिनोमडि (झील मक्खियों) जीवाश्मों का उपयोग किया और तारमि बेसनि में शीतलक (Cooling) और शुष्कन (Drying) की अवधि (420-600 ई.) पाई गई, जिसका अर्थ है कि उस समय के दौरान इस क्षेत्र में तापमान में कमी आई तथा वर्षा भी कम हुई (जलवायु परिवर्तन)।
    - बर्फ के पिघलने से प्राप्त होने वाले जल और वर्षा में कमी के कारण तारमि बेसनि को जल की कमी का सामना करना पड़ा जिसके चलते यह पारंपरिक मार्ग कम व्यवहार्य हो गया। इस प्रकार पारंपरिक मार्ग से होकर गुजरने वाले कारवाँ (Caravans) तियानशान पहाड़ों के साथ उत्तरी मार्ग की तरफ स्थानांतरित हो गए क्योंकि वहाँ अधिक प्रचुर एवं सतत जल संसाधन उपलब्ध थे।
- **भू-राजनीतिक कारण:**
  - तारमि बेसनि में जलवायु में सुधार होने के बाद भी (600-850 ई. के बीच गर्म और आर्द्र), व्यापार मार्ग उत्तरी जुंगगर बेसनि मार्ग पर बना रहा।
  - इसका कारण शनिजियांग के दक्षिण में टुबो साम्राज्य (तुबो) का उदय है, जिसकी विस्तारित शक्ति का टकराव चीन के तांग राजवंश से हुआ, जिससे पारंपरिक तारमि बेसनि मार्ग व्यापार के लिये संभवतः कम सुरक्षित या राजनीतिक दृष्टि से कम अनुकूल हो गया।

## सलिक रूट का क्या ऐतिहासिक महत्त्व क्या था?

- **आर्थिक महत्त्व:**

- सलिक रोड **मुख्य व्यापार मार्ग** के रूप में कार्य करता था, जिससे चीन, भारत, फारस, अरब और भूमध्य सागर के बीच रेशम, मसाले, मूल्यवान धातुओं और रत्नों जैसे **उच्च-स्तरीय उत्पादों का व्यापार** संभव हुआ।
- इससे **अत्यधिक धन अर्जन और समृद्धि** की प्राप्ति हुई, जिससे इस प्राचीन मार्ग के आस-पास **स्थिति समाजों की आर्थिक उन्नति व प्रगति** में सहायता मिली।
- **सांस्कृतिक आदान-प्रदान:**
  - सलिक रूट ने पूरव और पश्चिम में **सांस्कृतिक, कलात्मक एवं धार्मिक विचारों के आदान-प्रदान** को सुगम बनाया, जिससे **बौद्ध धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम** तथा अन्य मान्यताओं का प्रसार हुआ। इससे प्रौद्योगिकी, कृषिप्रथाओं और कलात्मक परंपराओं का हस्तांतरण भी संभव हुआ।
  - सांस्कृतिक वरिसत को समृद्ध बनाते हुए तथा एक विविध एवं परस्पर संबद्ध विश्व के निर्माण में योगदान देते हुए इस आदान-प्रदान ने **सांस्कृतिक, भाषाओं और ज्ञान के सम्मिश्रण को बढ़ावा दिया**।
- **भू-राजनीतिक महत्त्व:**
  - सलिक रूट **व्यापार मार्गों का एक महत्त्वपूर्ण जाल** था, जो शासन करने वाले साम्राज्यों को शक्ति और प्रभुत्व प्रदान करता था। इसकी सुरक्षा हेतु कलिबंदी की गई और साथ ही सैन्य चौकियों तथा कूटनीतिक संबंध स्थापति किये गए।
  - इस मार्ग पर नियंत्रण स्थापति करने के लिये हुई प्रतस्पर्द्धा ने **यूरेशिया के भू-राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया**, जिसने सदियों तक विभिन्न सभ्यताओं के उत्थान और पतन को प्रभावित किया।
- **प्रौद्योगिकी संबंधी प्रगति:**
  - सलिक रूट ने पूरव और पश्चिम के बीच **कम्पास (दिशा निर्णय यंत्र), बारूद और मुद्रण जैसी तकनीकी नवाचारों के आदान-प्रदान** को संभव बनाया।
  - इसने ऊँट कारवाँ और समुद्री नौपरविहन सहित परविहन की उन्नत विधियों के विकास को भी बढ़ावा दिया।
- **वरिसत और समकालीन प्रासंगिकता:**
  - **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव** जैसी पहल वर्तमान आर्थिक और भू-राजनीतिक गतिशीलता में इसके महत्त्व को उजागर करती। यह पहल दर्शाती है कि सलिक रूट वर्तमान में भी आधुनिक व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रभावित करता है।

**सलिक रूट का अंत किस प्रकार हुआ और वर्तमान में इसके पुनरुत्थान हेतु क्या प्रयास किये जा रहे हैं?**

- **सलिक रूट का अंत:**
  - वर्ष 1453 में **ओटोमन साम्राज्य** ने पश्चिम के साथ व्यापार बंद कर दिया, जिससे पूरव और पश्चिम अलग हो गए तथा अंततः मूल सलिक रूट त्रिहति हो गया। बाद के समय में अधिक कुशल पूरव-पश्चिम व्यापार के लिये वैकल्पिक समुद्री मार्गों की खोज की गई।
- **सलिक रूट का पुनरुत्थान:**
  - वर्ष 2013 में, चीन ने सलिक रूट को पुनः क्रियाशील बनाने के लिये **"वन बेल्ट, वन रोड"** (OBOR) अथवा **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव** रणनीति की पहल की।
  - इसका उद्देश्य एशिया, यूरोप और पूरवी अफ्रीका के 60 से अधिक देशों के साथ कनेक्टिविटी स्थापति करना है।

**बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) क्या है?**

- **परिचय:**
  - यह वैश्विक कनेक्टिविटी और सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू की गई एक बहुआयामी **विकास रणनीति** है।
  - इसकी शुरुआत वर्ष 2013 में की गई थी और इसका उद्देश्य **दक्षिण पूरव एशिया, मध्य एशिया, खाड़ी क्षेत्र, अफ्रीका और यूरोप** को स्थलीय और समुद्री मार्गों के नेटवर्क से जोड़ना है।
- **उद्देश्य:**
  - इसका उद्देश्य बुनियादी ढाँचे, व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ाकर अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा देना है।
- **BRI के मार्ग:**
  - **सलिक रोड इकोनॉमिक बेल्ट:**
    - **BRI** का यह खंड स्थल मार्गों के नेटवर्क के माध्यम से यूरेशिया में **कनेक्टिविटी, बुनियादी ढाँचे और व्यापार संबंधों को बेहतर बनाने हेतु समर्पित** है।
  - **मेरीटाइम सलिक रोड:**
    - यह **बंदरगाहों, शिपिंग मार्गों एवं समुद्री अवसंरचना परियोजनाओं** के रूप में समुद्री संपर्क और सहयोग पर जोर देता है।
      - यह **दक्षिण चीन सागर** से शुरू होकर **भारत-चीन**, दक्षिण-पूरव एशिया तथा हिंद महासागर के इरद-गरिद होते हुए अफ्रीका और यूरोप तक पहुँचता है।
- **भौगोलिक गलियारे:**
  - भूमि आधारित सलिक रोड इकोनॉमी बेल्ट में विकास के लिये 6 प्रमुख गलियारों की परिकल्पना की गई है:
    - **चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC)**।
    - नया यूरेशियन लैंड ब्रिज आर्थिक गलियारा।
    - चीन-इंडोचाइना प्रायद्वीप आर्थिक गलियारा।
    - चीन-मंगोलिया-रूस आर्थिक गलियारा।
    - चीन-मध्य एशिया-पश्चिम एशिया आर्थिक गलियारा।
    - चीन-म्यांमार आर्थिक गलियारा।



## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

**????????????**

प्रश्न. कभी-कभी समाचारों में देखा जाने वाले बेल्ट एंड रोड इनशिएटिवि का उल्लेख कसिके संदर्भ में कथिा जाता है? (2016)

- (a) अफ्रीकी संघ
- (b) ब्राज़ील
- (c) यूरोपीय संघ
- (d) चीन

उत्तर: d

?????

प्रश्न. चीन-पकस्तान आर्थिक गलियारे (सी.पी.ई.सी.) को चीन की अपेक्षाकृत अधिक विशाल 'वन बेल्ट वन रोड' पहल के एक मूलभूत भाग के रूप में देखा जा रहा है। सी.पी.ई.सी. का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत कीजिये और भारत द्वारा उससे कनारा करने के कारण गनाइये। (2018)

प्रश्न. "चीन अपने आर्थिक संबंधों एवं सकारात्मक व्यापार अधिष को एशिया में संभाव्य सैन्य शक्ति हैसियत को विकसित करने के लिये उपकरणों के रूप में इस्तेमाल कर रहा है।" इस कथन के प्रकाश में उसके पड़ोसी के रूप में भारत पर इसके प्रभाव पर चर्चा कीजिये। (2017)

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/shifting-of-route-of-the-silk-road>

